कलीसिया अध्याय 22

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के द्वारा उसके मार्गदर्शन के लिए, उसकी उपस्थिति के लिए, और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया का निर्माण करने के विषय में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर को समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट)	*[शान्त समय]* **1 तीमुथियुस 1-4**

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (1 तीमुथिसुय 1 - 4) में से अपने शान्त समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके एक-दूसरे के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।
जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करें** (5 मिनट)	*[यूहन्ना में पाए जाने वाले मुख्य पद]* **(9) यूहन्ना 8:12**

दो-दो करके ***समीक्षा*** करें।
(9) यूहन्ना 8:12 : मैं जगत की ज्योति हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट)	*[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 9:1-41**

प्रस्तावना। **यूहन्ना 9:1-41** का एक साथ अध्ययन करने के लिए पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें। यूहन्ना 9:1-41 यीशु मसीह की जन्म के अन्धे से की गई बात की व्याख्या करते हैं। "क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?" "तूने उसे देखा भी है : और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वह वही है।" उसने सिखाया है कि वह उन लोगों के लिए आया जो यह जानते हैं कि वे (आत्मिक रूप से) अन्धे हैं और जो यह सोचते हैं कि वे देख सकते हैं।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 9:1-41 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें . **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में,समूह के सदस्य अलग अलग बातें साझा करेंगे)

खोज 1 **- पाप और पीड़ा के बीच सम्बन्ध**

बाइबल के अनुसार, शारीरिक पीड़ा जैसे कठिनाइयाँ, उत्पीड़न, दुर्घटनाएँ, बीमारी, दोष और मृत्यु, का तीन नैतिक कारणों द्वारा पता लगाया जा सकता है :

(1) शारीरिक पीड़ा किए गए पाप के कारण हो सकती है (मानवजाति के पूर्वज, आदम द्वारा पाप)।
पहला पूर्वज। परमेश्वर ने पहले मनुष्य आदम को परमेश्वर की समानता में के रूप में बनाया और उसको मानवजाति में सभी लोगों के प्रतिनिधि के रूप में माना। जब आदम पाप में गिरा, तो उसके द्वारा पूरी मानवजाति भी उसके साथ पाप में गिर गई। स्वभाव से सभी लोग पापी हैं और बालक के रूप में पापी स्वभाव के साथ ही पैदा होते हैं।

रोमियों 5:12-21 और 8:19-23 और बाइबल के अन्य पद स्पष्टरूप से सिखाते हैं कि पाप में पहले मनुष्यों के पतन ने पूरी मनुष्य जाति को प्रभावित किया। आदम और हव्वा द्वारा किए गए पाप ने शैतान और मनुष्य के बीच बैर उत्पन्न किया (उत्पत्ति 3:15), जो बालकों के पैदा होने के समय महिलाओं के लिए पीड़ा और मनुष्य के कार्य में कड़ी मेहनत (उत्पत्ति 3:19), पृथ्वी पर एक अभिशाप और मनुष्यों की शारीरिक मृत्यु का कारण बना (उत्पत्ति 3:19)। सभी लोग प्रथम आदम के पाप के कारण पीड़ित पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए दोनों अच्छे और बुरे लोग बाढ़ या सूखे, भूकंप या महामारी और एक-दूसरे के साथ की गई बुराईयों जैसी आपदाओं से पीड़ित हैं।

(2) शारीरिक पीड़ा माता-पिता के द्वारा किए गए पापों के कारण हो सकती है।
समुदाय। परमेश्वर किसी विशेष विशेष व्यक्ति के साथ नहीं, बल्कि समुदायों के साथ भी वैसा ही व्यवहार करता है। परमेश्वर की आज्ञाएँ पूरे समुदाय, परिवारों के साथ-साथ प्रत्येक व्यक्ति को भी दी गई हैं। निर्गमन 20:5 में परमेश्वर कहता है कि जो उससे बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों और परपोतों को भी वह पितरों का दण्ड देगा। यद्यपि परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से बाहर निकाला था और उन्होंने कनान देश पर अपना कब्ज़ा कर लिया था (समुदाय, राष्ट्र), फिर भी उन्होंने न तो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया और न ही उसके पीछे चले। इसलिए बाद की पीढ़ियों में, परमेश्वर ने इस्राएल को अश्शूर व बेबीलोन को लूटने, घेराबन्दी, युद्ध और निर्वासन के लिए सौंप दिया (यिर्मयाह 32:18-24)।

(3) शारीरिक पीड़ा किसी के अपने व्यक्तिगत पापों के कारण हो सकती है।
व्यक्तिगत। परमेश्वर का न्याय हर व्यक्ति के पाप के साथ गिना जाएगा। यिर्मयाह 31:30 में वह कहता, "क्योंकि जो कोई जंगली दाख खाए उसी के दाँत खट्टे हो जाएँगे, और हर एक मनुष्य अपने ही अधर्म के कारण मारा जाएगा।" और क्योंकि सभी ने पाप किया है, सभी लोग पीड़ा सहेंगे और सभी लोग मारे जाएँगे! "पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है" (रोमियों 6:23)।

यह स्पष्ट है कि किसी के स्वयं के पापों के कारण और उनके माता-पिता के पाप के कारण शारीरिक पीड़ा वास्तव में आदम के पाप में गिरने का परिणाम है। हालाँकि, यहूदियों ने अपने माता-पिता के पाप और अपने पाप के महत्व को विस्तृतरूप से वर्णन करने का प्रयास किया। उनका मानना था कि किसी की पीड़ा और किसी के पाप के बीच एक निश्चित सम्बन्ध ज़रूर होता है। उन्होंने हर पीड़ा को एक विशिष्ट पाप के कारण के साथ जोड़ा। उदाहरण के लिए, अय्यूब के मित्रों ने अपनी पीड़ा का कारण विधवा और अनाथों के साथ की गई क्रूरता के पाप को बताया (अय्यूब 22:5-11)। यहूदी धार्मिक शिक्षकों (रब्बी) ने यह भी सिखाया कि बच्चे गर्भ में पाप करने में सक्षम होते हैं। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि एसाव ने अपने भाई को तब भी मारने की कोशिश की थी, जब वह गर्भ ही में था (उत्पत्ति 25:22-26)।

(4) शारीरिक पीड़ा का ईश्वरीय उद्देश्य हो सकता है।
लूका 13:2-5 में, यीशु सिखाता है कि जो लोग विपत्ति में पड़ते हैं वह उन लोगों से अधिक अपराधी नहीं हैं जिन पर विपत्ति नहीं पड़ती। उसने कहा, "क्या तुम समझते हो, कि ये गलीली, और सब गलीलियों से पापी थे कि उनपर ऐसी विपत्ति पड़ी? मैं तुमसे कहता हूँ, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे"।

यहाँ यूहन्ना 9:3 में यीशु सिखाता है कि विपत्ति आने का सिर्फ एक ही कारण नहीं होता, बल्कि इसका ईश्वरीय उद्देश्य भी हो सकता है! यह मनुष्य अन्धेपन से पीड़ित था, इसलिए नहीं कि उसने या उसके माता-पिता ने पाप किया था, परन्तु इसलिए ताकि उसके चंगे हो जाने के द्वारा परमेश्वर को महिमा मिले! उसकी पीड़ा का उद्देश्य था! उसकी चंगाई लोगों को यीशु मसीह को जानने और स्वीकार करने के लिए थी। हालाँकि यह स्वीकार करना मुश्किल हो सकता है, कि सभी दु:ख और परेशानियों का अन्तिम उद्देश्य मसीह में परमेश्वर की महिमा के रूप में ही हो।

9:3-5

खोज 2 - परमेश्वर के काम जो मसीहियों को करने चाहिए, उन्हें आज ही करना चाहिए।

यूहन्ना 9:4 में यीशु कहता है, "जिसने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है : वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता।"

(1) परमेश्वर का कार्य करने के लिए केवल थोड़ा ही समय है।

यीशु कहता है कि उसका दिन केवल तब तक है जब तक वह इस धरती पर है। उसके शिष्यों के लिए भी उनके दिन तब तक हैं जब तक वह इस धरती पर रहते हैं। आज भी यीशु के हर चेले के लिए पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य को करने का एक ईश्वरीय समय नियुक्त है। परमेश्वर ने हर एक मसीही को निश्चित समय तक के लिए ही रखा है। यही वह समय है जो उसे मिला है! इसलिए, प्रत्येक मसीही को परमेश्वर द्वारा दिए गए अवसरों में से अधिकांश अवसरों का लाभ उठाना चाहिए (इफिसियों 5:16)।

(2) परमेश्वर के कार्य में प्रेम के कार्य होते हैं।

परमेश्वर लगातार हमारे सामने हमारी मार्ग पर लोगों को लेकर आता है। हमारे पास तीन तरीकों से प्रतिक्रिया करने या प्रतिक्रिया देने का विकल्प होता है।

- कुछ लोग उन लोगों से ईर्ष्या करने लगते हैं जिन्हें परमेश्वर उनके सामने उनके मार्ग पर लाता है और उन्हें नष्ट करने का प्रयास करते हैं। वे कुछ भी रचनात्मक नहीं कर सकते हैं। वे सिर्फ आलोचना, गपशप (बुराई) दुर्व्यवहार या यहाँ तक कि दूसरों को दबा या पीड़ा दे सकते है। ऐसा ही यहूदी धार्मिक अगुवों ने भी यीशु के साथ किया था।
- अन्य लोग उन लोगों के बारे में उत्सुक होते हैं जिन्हें परमेश्वर उनके सामने लाता है और वे उनके बारे में और अधिक जानने की कोशिश करते हैं। चेले एक धार्मिक प्रश्न को हल करना चाहते थे कि किसके पाप के द्वारा अन्धेपन की पीड़ा इस मनुष्य पर पड़ी। हालाँकि, यीशु केवल यह नहीं चाहता कि हम इन चर्चाओं में शामिल हों। वह कार्य चाहता है (कर्म करने के लिए)!
- तीसरा मरीहा परमेश्वर के कार्य को करना, अन्य लोगों का निर्माण करके उन्हें बढ़ाना और उनकी सहायता करना है।

9:13

प्रश्न 1 - वह फरीसी कौन थे जिनके पास पहले उस अन्धे भिखारी को लाया गया था?

ध्यान दें।

ये फरीसी महासभा के आदेशों के तहत काम कर रहे थे, जो यहूदियों के बीच सबसे ज़्यादा राज्य करने वाले शासक थे। उनके पास उस अन्धे व्यक्ति को आराधनालय में बैठकों से निष्कासित करने का अधिकार था (यूहन्ना 9:22,34)। उस समय महासभा में कई बार यह जाँचने का प्रयास किया गया कि आने वाला मसीहा था कि नहीं (यूहन्ना 1:24)। अध्याय 9 में वे शायद उस आश्चर्यकर्म के बारे में जानने का प्रयास कर रहे थे जिसे कथित रूप से मसीहा द्वारा किया गया था। उसके अलावा, अन्धे व्यक्ति के माता-पिता ने सावधानी बरतनी आरम्भ की, क्योंकि वे डरते थे कि कहीं फरीसी उन्हें महासभा से बाहर न निकाल दें। इन सभी तथ्यों से यह पता चलता है कि ये फरीसी शायद अधिकारिक रूप से नियुक्त और अधिकृत महासभा के प्रतिनिधि थे।

9:16-34

प्रश्न 2 - फरीसियों ने अपने शत्रुओं के विरूद्ध तर्क के किस तरीके का उपयोग किया?

ध्यान दें।

यूहन्ना अध्याय 9 में फरीसियों द्वारा अपने शत्रुओं के विरूद्ध तर्कों में इस्तेमाल की जाने वाली विधियों के विषय में बताया गया है।

(1) एक निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए फरीसियों ने स्वयं आपस में वाद-विवाद किया।

यूहन्ना 9:16 में कुछ फरीसियों ने यीशु के विरूद्ध यह तर्क दिए :

- परमेश्वर की ओर से आने वाले सभी व्यक्ति सब्त के दिन को मानते हैं
- यह व्यक्ति, यीशु सब्त के दिन को नहीं मानता
- इसलिए, यीशु परमेश्वर की ओर से नहीं है (और उसने वहाँ आश्चर्यकर्म नहीं किया)

उनका तर्क तार्किक लगता है, परन्तु यह गलत है, क्योंकि यह सब्त के विषय में बाइबल की शिक्षा पर आधारित नहीं

है। यह सब्त के विषय में उनके स्वयं के नियमों पर आधारित था!

अन्य फरीसियों ने यीशु के लिए निम्न अनुसार तर्क दिए :

- केवल वे लोग जो पापी नहीं हैं, जन्म के अन्धे लोगों की आँखों को खोल सकते हैं।
- इस व्यक्ति, यीशु ने जन्म के अन्धे व्यक्ति की आँखों को खोला है।
- इसलिए यीशु पापी नहीं है।

फरीसियों में स्वयं के बीच मतभेद था। जबकि कुछ ने यह निष्कर्ष निकाला कि यीशु परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकता, अन्य लोगों ने तर्क दिया कि वह परमेश्वर की ओर से आया होगा।

(2) फरीसियों ने तथ्यों को नज़रअन्दाज़ कर दिया, लेकिन लोगों पर राज्य करने के लिए भय का प्रयोग किया।

यूहन्ना 9:17-23 में, उन्होंने अन्धे व्यक्ति के माता-पिता से सवाल किया। माता-पिता ने कहा कि यह उनका पुत्र था और वह निश्चित रूप से अन्धा था। इसलिए, वास्तव में, एक अद्‌भुत आश्चर्यकर्म हुआ था। इन तथ्यों से इन्कार नहीं किया जा सकता!

लेकिन, हाँ फरीसी यह स्वीकार करने के लिए बिलकुल तैयार नहीं थे कि यीशु ने यह आश्चर्यकर्म किया था। इसके अलावा महासभा पहले से ही एक निर्णय ले चुकी थी, कि जो कोई यह स्वीकार करता है कि यीशु मसीह है, उसे सभास्थल (आराधनालय) से बाहर निकाल दिया जाएगा (पद 22)। फरीसियों ने लोगों में भय उत्पन्न करने का फैसला लिया, ताकि कोई भी व्यक्ति उनका विरोध न कर सके। हालाँकि, उनके पास ऐसा निर्णय लेने के लिए परमेश्वर द्वारा दिया गया कोई अधिकार नहीं था, क्योंकि यह वे नहीं बल्कि परमेश्वर है जो यह निर्धारित करता है कि मसीहा कौन है और वह क्या करता है!

(3) फरीसियों ने यीशु को बदनाम करने के लिए तथ्यों को मोड़ दिया।

यूहन्ना 9:24 में उन्होंने अन्धे व्यक्ति को ऐसी बातें कहने का प्रयास किया जो यीशु को बदनाम कर सकें। उन्होंने कहा, "हम जानते हैं कि वह व्यक्ति, यीशु, एक पापी है। इसलिए, इस आश्चर्यकर्म की महिमा सिर्फ परमेश्वर को दें।" वे चाहते थे कि अन्धा व्यक्ति यह कहे कि यह आश्चर्यकर्म यीशु ने नहीं, बल्कि परमेश्वर ने किया था। उन्होंने यीशु के विरूद्ध तर्क दिया :

- केवल वे लोग जो पापी नहीं है, वे जन्म के अन्धे व्यक्ति की आँखों को खोल सकते हैं।
- यह व्यक्ति, यीशु, एक पापी है (वह सब्त को नहीं मानता)।
- इसलिए वह जन्म के अन्धे व्यक्ति की आँखों को नहीं खोल सकता।

फरीसियों ने तथ्यों को तोड़-मरोड़ दिया। वे चाहते थे कि हर कोई यह विश्वास कर ले कि यीशु पापी था और वह ऐसा आश्चर्यकर्म नहीं कर सकता। लेकिन वह जन्म का अन्धा व्यक्ति तथ्यों पद दृढ़ रहा (पद 25) : "मैं एक बात जानता हूँ कि मैं अन्धा था और अब देखता हूँ!"

(4) फरीसियों ने उसे असंगत बयान देने के लिए अपने प्रश्न दोहराए।

यूहन्ना 9:26-27 - फरीसी लोग बार-बार एक ही प्रश्न पूछते रहे ताकि वे अपने प्रतिद्वंदी को कुछ विरोधाभासी कहने पर फँसा सकें। लेकिन अन्धे व्यक्ति ने चर्चा को टालने की उनके इस तरीके को देखा। उसने फरीसियों से पूछा कि असली कारण क्या है कि वे फिर से वही जवाब सुनना चाहते थे, क्या वे यीशु के चेले बनना चाहते थे। इस बात को सुनकर फरीसी क्रोधित हो गये।

(5) फरीसियों ने हार नहीं मानी, बल्कि दुर्व्यवहार का सहारा लिया।

यूहन्ना 9:28-33 - फरीसियों ने शर्मिंदा लोगों की तरह अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की : उन्होंने हार नहीं मानी और न ही मानना चाहते थे! तो उन्होंने बदनामी और दुर्व्यवहार का सहारा लिया। उन्होंने यीशु को "वह मनुष्य" और "एक पापी" कहा और कहा कि वे नहीं जानते कि वह कहाँ का है। इस बार, अन्धे व्यक्ति ने फरीसियों को अपने तरीके से उत्तर दिया (यूहन्ना 9:31)। उसने यीशु के लिए निम्नानुसार तर्क दिया :

- परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता, केवल परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों की वह सुनता है।
- परमेश्वर ने इस व्यक्ति की बात सुनी, यीशु (एक अन्धे व्यक्ति की आँखें खोली थीं)
- इसलिए, यीशु निश्चित रूप से परमेश्वर की ओर से आया था (अन्यथा वह यह आश्चर्यकर्म करने में सक्षम नहीं होता)!

अन्धे व्यक्ति ने फरीसियों को अपने तर्क के तरीके से हरा दिया! केवल अन्तर यह था कि अन्धे व्यक्ति का तर्क सही और बाइबल के अनुसार था। परमेश्वर एक धर्मी व्यक्ति की प्रार्थना सुनता है (1 पतरस 3:12)। उसने यीशु की बात सुनी!

(6) फरीसियों ने हारने पर अपने अधिकार का दुरुपयोग किया और हिंसा का सहारा लिया।

यूहन्ना 9:34। फरीसियों को अपमानजनक हार का सामना करना पड़ा। उनके पास केवल एक ही चीज़ बाकि रह गयी थी, हिंसा का उपयोग करना और अपने अधिकार का दुरुपयोग करना! उन्होंने अन्धे व्यक्ति को महासभा से बाहर निकाल दिया। यह एक गंभीर दण्ड था। एक व्यक्ति, जो महासभा से बाहर निकाल दिया गया था, अब वह इस्राएल के धार्मिक और सामाजिक जीवन से अलग हो गया था! लोग उससे बचेंगे और उसके साथ व्यापार करने से इंकार करेंगे। लोग दण्ड के भय के बिना भी उसे मारने के इच्छुक हो सकते हैं। कुछ धर्मों में आज भी यह किया जाता है!

9:35

प्रश्न 3 **- यीशु मसीह कैसे लोगों से बात करता है?**

ध्यान दें।

बाद में यीशु बाहर गया और उस अन्धे आदमी की तलाश की जिसे उसने चंगा किया था। जबकि फरीसियों ने उसे निकाल दिया था और उसे अलग कर दिया, परन्तु यीशु ने उसे ढूँढ़कर पाया! जबकि धार्मिक अगुवे और शिक्षकों ने स्वयं को धार्मिक नियमों और रीति-रिवाज़ों में बाँध लिया था, यीशु मसीह को उसकी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक चंगाई में रूचि थी! धार्मिक लोग किसी व्यक्ति में रूचि नहीं रखते हैं, लेकिन यीशु सब लोगों को बचाने के लिए आया था! वह लोगों को चंगा करने, टूटे हुए रिश्तों को बनाने, परमेश्वर के साथ लोगों का मेल-मिलाप कराने, ज़रूरतमंदों की सहायता करने और कंगालों को सुसमाचार सुनाने आया (मत्ती 11:2-6)। जबकि धार्मिक नेताओं और शिक्षकों को केवल अपनी शक्ति, अधिकार और सम्मान से मतलब था, यीशु मसीह अन्य लोगों के उद्धार और हित के लिए चिंतित था। जबकि धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने स्वयं को धार्मिक नियमों और रीति-रिवाज़ों में बाँध लिया था, यीशु लोगों के लिए आया था।

9:38

प्रश्न 4 **- क्या मसीही लोग यीशु मसीह की उपासना कर सकते हैं?**

ध्यान दें।

यूहन्ना 9:38 में हम पढ़ते हैं, "उस अन्धे व्यक्ति ने कहा, 'हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ' : और यीशु को दण्डवत किया"। उस व्यक्ति ने यह स्वीकार किया कि यीशु ही मसीहा, परमेश्वर का पुत्र था और वह ही दण्डवत करने योग्य था। उसने सिर्फ यीशु का आदर ही नहीं किया (जैसा कि कुछ धर्म अभी भी करते हैं), लेकिन वास्तव में उसने यीशु को दण्डवत किया! वह यीशु के सामने अपने घुटनों पर गिर गया।

यूहन्ना 4:20-24 में, वही शब्द "भजन" निश्चित रूप से परमेश्वर की आराधना को दर्शाता है। सुसमाचार के अन्य हिस्सों में भी यीशु की आराधना उसके शिष्यों और अन्य लोगों द्वारा की जाती है (मत्ती 2:11; 14:33; 28:9,17; लूका 24:52; प्रकाशितवाक्य 5:13-14)। उसने लोगों का कभी भी विरोध नहीं किया और न ही उन्हें सही किया। उसने लगातार यह दावा किया कि वह परमेश्वर का पुत्र था, परमेश्वर पिता के बराबर और समान आदर और महिमा के योग्य!

9:39-41

प्रश्न 5 **- लोग आत्मिक रूप से अंधे कब होते हैं?**

ध्यान दें।

यूहन्ना 9:39 और 41 में, यीशु ने कहा, "मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएँ"। फरीसियों से वह कहता है, "यदि तुम अन्धे होते तो पापी न ठहरते परन्तु अब कहते हो, कि हम देखते हैं, इसलिये तुम्हारा पाप बना रहता है"। फरीसियों को क्षमा नहीं किया गया, क्योंकि वे यह स्वीकार नहीं करना

चाहते थे कि वे पापी हैं!

इस दुनिया में यीशु मसीह का पहला आगमन "उद्धार" (यूहन्ना 3:16-17) और "न्याय" के उद्देश्य के लिए था (मत्ती 3:11-12; यूहन्ना 3:18,36)। जो विश्वास करते हैं उन्हें उद्धार मिलता है और जो उसे अस्वीकार करते हैं उन्हें विनाश के साथ दण्डित किया जाता है।

(1) जो लोग स्वीकार करते हैं कि वे अन्धे हैं वे फिर से देखेंगे।

जो लोग यह स्वीकार करते हैं कि वे पापी हैं और उनके पास परमेश्वर की आवश्यक धार्मिकता और पवित्रता नहीं है, वे आत्मिक अन्धे लोगों की तरह हैं जिनकी आँखें खोली गयीं। वे यह महसूस करते हैं कि परमेश्वर ने उनके हृदय और मन को छुआ है और अपने वचन को (सुसमाचार) ग्रहण करने योग्य बनाया है। वे अपने पाप और लाचारी से पश्चाताप् करते हैं और जगत की ज्योति, यीशु मसीह तक पहुँच जाते हैं। यीशु मसीह को प्राप्त करने के द्वारा वह उद्धार को प्राप्त करते हैं। उनका आत्मिक ज्ञान खोला गया है, वे सत्य को देख सकते हैं और सभी चीज़ों को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देख सकते हैं।

(2) जो लोग दावा करते हैं कि वे हमेशा देखते हैं वे अन्धे हो जाएँगे।

जो लोग स्वीकार करते हैं कि वे पापी हैं और उन्हें उद्धार की आवश्यकता है वे ऐसे लोगों की तरह हैं जो देखते थे पर अन्धे हो गए हैं। वे अपने पाप, निर्बलताओं और कमियों को नहीं देख सकते हैं या उन्हें देखना (स्वीकार नहीं करना चाहते हैं) नहीं चाहते हैं। वे हमेशा यह दावा करते हैं कि वे सही और "अच्छे" लोग हैं। उन्हें उद्धारकर्ता की कोई आवश्यकता नहीं है। वे अपने दिमाग को बन्द रखते हैं और सुसमाचार (परमेश्वर के शब्दों) के प्रति अपने हृदय को कठोर करते हैं। वे पश्चाताप नहीं करते हैं और यीशु मसीह, जगत की ज्योति के साथ उनका कुछ भी लेना-देना नहीं है। यीशु मसीह को छोड़कर, उन्होंने उद्धार को अस्वीकार कर दिया। वे इतने अन्धे हो जाते हैं कि वे अब सत्य को नहीं समझ सकते हैं और केवल पापी दुनिया के दृष्टिकोण से चीज़ों को देख सकते हैं।

चरण 4 - लागू करना — **अनुप्रयोग**

विचार करें। इस परिस्थिति में कौन से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग है?

बाँटें और लिख लें। आइये हम एक दूसरे के साथ विचार विमर्श करें और यूहन्ना 9:1-41 में से संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

विचार करें। ऐसा कौन सा अनुप्रयोग है जिसे परमेश्वर आपसे चाहता है कि आप उसे अपने व्यक्तिगत जीवन में लागू करें?

लिख लें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी नोटबुक में लिख लें। अपने इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को दूसरों के साथ बाँटने में अपने आप को स्वतंत्र महसूस करें।

(स्मरण रखें कि हर समूह में लोग अलग-अलग सत्यों को लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग बताएँगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. यूहन्ना 9:1-41 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

9:3 - यह जानें कि पीड़ा सिर्फ किसी कारण से ही नहीं होती है, बल्कि इसका उद्देश्य भी हो सकता है! जन्म के अन्धे व्यक्ति की पीड़ा का एक उद्देश्य था! उसकी चंगाई लोगों को यीशु मसीह को जानने और स्वीकार करने में सहायता करेगा! हालाँकि यह स्वीकार करना मुश्किल हो सकता है, कि सभी दु:ख और विपत्तियों का अंतिम उद्देश्य परमेश्वर की महिमा को देना है!

9:4 - यह समझें कि परमेश्वर ने आपको यह जीवन, चाहे छोटा हो या बड़ा, केवल इसीलिए दिया है, ताकि परमेश्वर का काम किया जा सके। आपको इस पृथ्वी पर फिर से ऐसा करने का मौका नहीं मिलेगा जो परमेश्वर आपसे चाहता है कि आप करें। अपने जीवन की योजनाओं को परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार ही बनाएँ।

9:4 - यह समझें कि परमेश्वर का कार्य निर्माणकारी काम करना और ज़रूरतमंदों की मदद करना है!

9:16 – हमेशा स्वयं से पूछें, "दूसरे व्यक्ति ने अपना तर्क किस आधार पर दिया है? बाइबल पर या स्वयं की व्याख्याओं पर?" कई तर्क तर्कसंगत लगते हैं, लेकिन गलत हैं, क्योंकि वे गलत बात पर आधारित हैं।

9:23 – यह समझें कि कुछ धार्मिक अगुवे और शिक्षक आपको धार्मिक समुदाय और समाज से बाहर फेंकने की धमकी देकर अपने दृष्टिकोण को स्वीकार करने के लिए मजबूर करने का प्रयास करेंगे। कभी-भी धार्मिक या सामाजिक दबाव में न आएँ।

9:24-25 – यह समझें कि कुछ धार्मिक अगुवे और शिक्षक विजयी होने के लिए तथ्यों को मोड़ देंगे। हमेशा तथ्यों को पकड़ के रखें।

9:25 – एक तरफा मन रखें और जानें कि किस तरह यीशु मसीह ने आपका जीवन बदल दिया है।

9:39 – अपने आत्मिक अन्धेपन को स्वीकार करें और आपको उद्धार प्राप्त होगा।

2. यूहन्ना 9:1-41 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं तब तक परमेश्वर के कार्य करना चाहता हूँ जब तक कि मैं जीवित हूँ। परमेश्वर ने मुझे केवल एक जीवन दिया है और मैं इस जीवन को उसकी सेवा के लिए समर्पित करना चाहता हूँ। मैं ईर्ष्यापूर्ण और विनाशकारी होने से बचना चाहता हूँ, और इसके बजाय निर्माणकारी होना चाहता हूँ। मैं विश्वास करना चाहता हूँ और वह करना चाहता हूँ जो बाइबल सिखाती है, विशेष रूप से प्रेम और ज़रूरतमंद लोगों की मदद करना चाहता हूँ।

मैं याद रखना चाहता हूँ कि पीड़ा मसीही जीवन का हिस्सा है। ऐसा समय आएगा जब मैं अपने पापों के कारण या अपने माता-पिता के पापों के कारण या मेरे समाज और मेरी संस्कृति के पापों के कारण पीड़ित हो जाऊँगा। लेकिन ऐसा समय भी आएगा जब अन्धे व्यक्ति की तरह मुझ पर विपत्ति आयेगी, क्योंकि परमेश्वर के मन में एक महिमान्वित उद्देश्य है। विपत्ति किसी कारण या उद्देश्य के बिना नहीं आती। विपत्ति, परमेश्वर की महिमा, पवित्रता में बढ़ने और अनन्तकाल में पूर्णता के लिए तैयार करने का साधन है।

चरण 5 – प्रार्थना करें **प्रतिक्रिया**

आइये एक-एक करके उस एक सत्य के लिए जो परमेश्वर ने हमें यूहन्ना 9:1-41 में सिखाया है, प्रार्थना करें। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है, प्रार्थना में उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया को दर्शाएँ। केवल एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह में लोग विभिन्न विषयों पर प्रार्थना करें।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[निवेदन]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** आपस में मिलकर दूसरों के लिए और संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **दूसरे अध्याय के लिए कार्य**

(***समूह का अगुवा।*** समूह के सदस्यों को यह कार्य घर के लिए लिखित रूप में दें या उन्हें इसे अपनी नोटबुक में लिखने दें)।

6. समर्पण। शिष्य बनाने और मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।

7. यूहन्ना 9 पर दूसरे व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ प्रचार, शिक्षा या अध्ययन करें।

8. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **1 तीमुथियुस 5 - 6 और 2 तीमुथियुस 1** के आधे अध्यायों के लिए चुना हुआ समय निर्धारित करें। सत्य विधि का उपयोग करें। इसके नोट्स बना लें।

9. याद करना। बाइबल की नई आयतों पर ध्यान लगाएँ और उन्हें याद करें **(10) (यूहन्ना 10:28)**। प्रतिदिन पहले याद की गई पाँच बाइबल की आयतों की समीक्षा करें।

10. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी और व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर किस प्रकार कार्य करता है (भजन संहिता 5:3)।

11. मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के विषय में अपनी नोटबुक में लिख लें। जो नोट्स आपने अपने चुने हुए समय में बनाए थे, जिन नोट्स को आपने याद किया था, अपने बाइबल अध्ययन के नोट्स और इस कार्य के नोट्स को भी इसमें शामिल करें।